आज अवकाश

दैनिक निर्दलीय कार्यालय में तकनीकी कारणवश १४ मार्च को अवकाश रहेगा। अतएव, निर्दलीय का आगामी अंक १६ मार्च २०२६ को पाठकों के हाथों में होगा।

– प्रबंध संपादक, दैनिक निर्दलीय

निर्दलीय प्रकाशन

फ१२६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें

निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ अंक- २२३ भोपाल १४ मार्च, डाक १५ मार्च २०२६ भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित पृष्ठ -८ मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

झूठी शान-शौकत ये परम्परा नहीं । रिश्ते हों शर्मशार ये परम्परा नहीं।।

त्वरित विचार
अग्र लेख-३५

कैलाश आदमी

सनातन परम्परायें जीवन तथा प्राण का आभूषण होती हैं। इनके बिना जीवन तथा प्राण दोनों ही निर्वस्त्र हो जाते हैं। कुल-परम्परा का निर्वहन प्रथम कर्तव्य वल्कि धर्म ही है। परम्परानुसार भले ही कोई व्यक्ति अपनी जाति या वर्ण से उच्च हो या निम्न, धार्मिक दृष्टि से अनुकरणीय है।

प्रत्येक कुल-परम्परा में उसकी अनेक आद्य-शक्तियाँ विद्यमान रहती हैं, जो पूज्यनीय व चिरस्मरणीय भी होती हैं। परम्पराओं से भागा मनुष्य स्वधर्म की दृष्टि से कुलद्रोही कहलाता है।

सृष्टि का अविर्भाव प्रकृति ने परम्परानुसार ही किया है किन्तु अंध विश्वास व अंध श्रद्धा के बशीभूत होकर लोग प्रकृति के स्थान पर सृष्टि का अविर्भाव ईश्वर प्रदत्त मानते है। सनातन धर्मी हिन्दू ईश्वर को नाना स्वरूपों में देखते हैं और घर व मंदिरों में पूजा अर्चना करते हैं। अन्य धर्मों में ईश्वर को एक ही रूप में बल्की निराकार स्वरूप में माना व पूजा जाता है किन्तु उसके प्रतिनिधी या पैगम्बर को ही मानता दी गई है और इसने परम्परा का स्वरूप ले लिया है। इसके बाबजूद धर्म में विश्वास करने वाले लोग ही हिंसा, अनाचार, भ्रष्टाचार, दुराचार तथा अत्याचार में संलिप्त पाये जाते हैं। ऐसे दुर्गुणयुक्त व्यक्ति परम्परा का हिस्सा नहीं, अपराधी हैं और भूमि पर भार हैं।

मनुष्यों में सद्गुण तथा दुर्गुण पृथक-पृथक परम्पराओं के प्रतिफल होते हैं। मानवता की परम्परा में ही महामानव उत्पन्न होते हैं। उत्तरोत्तर परिवर्तित परम्परायें, उत्तरोत्तर समाज का निर्माण करती चली जाती हैं। भौतिकतावाद के इस वर्तमान युग में, परम्पराये कहीं खो गई हैं। विकासशीलता के पक्षधर बुद्धिजीवी कदाचित् इस तथ्य पर ध्यान देने से कतराये से लगते हैं। सब कुछ जैसे वृर्तमान तक ही सीमित होकर रह गया है, जिससे परम्परावादी मूल्यों का दिन ब दिन और भी ह्रास व क्षरण होता जा रहा है जो भावी पीढ़ियों के लिए घातक है और परम्परावादियों की जड़ता व अज्ञानता का द्योतक है।

सोचने की बात है कि हम कहीं असफल हों, तो फिर मार्गदर्शन कहाँ और किससे पायें? थोथे वर्तमान से, या 'अ' से प्रारम्भ करने जा रहे नौजवानों के उस भविष्य से, जिसने ठीक से खड़े होना भी नहीं सीखा? क्या हम केवल स्वयं तथा अपने पुत्र/पुत्री, परिजन आदि को ही याद रखें, अहमियत दें और पिता-पूर्वजों के अनुभवों व परम्पराओं को बिसरा दें? यदि इसी बात को मान लिया जाये, तो फिर भविष्य में हमारा वंशज भी, इसे ही पारम्परिक सत्य मान लेगा और स्वयं तथा अपने वंश को ही याद रखेगा, अतीत को भूल जायेगा! प्रश्न की अनिवार्यता यही है कि हम पुरातन, आदर्श परम्पराओं को विस्मृत कर, क्या स्वयं को दरकिनार नहीं कर रहे ? जबकि यह सब तो कदाचित् हो ही रहा है। परम्पराओं को दरकिनार कर देना, परम्परावादी मानवजाति के लिए विषपान करने जैसा कृत्य होगा क्योंकि भविष्य कैसा होना चाहिए, यह हमारे पूर्वजों की मान्यताओं ने स्पष्ट कर दिया है। हमारे पुरातन ग्रंथ भी यहीं निर्देश देते हैं। उदाहरणतः राजवंशों की वंशावलियाँ, संतों व ऋषियों के गुरुकुल, संगीतज्ञों के घराने कुल-परम्परा का ही अंग हैं। भविष्य को यदि केवल कृत्रिम वुद्धि के भरोसे रहना है तो बात अलग है लेकिन अपनी मौलिक पराम्पराओं का अनुशरण करते हुये परिवार को सुखी-सभ्य-सुसंस्कृत बनाना है, तो सामाजिकता में भी परम्परावाद का बीजारोपण करना होगा और यह वर्तमान का ही कर्तव्य है अन्यथा भविष्य के गले में तकनीक व विज्ञान का पट्टा रहेगा और हाथ (जैसी कि तैयारी है) होंगे रोबोट के ?

परम्परा हाट बाजार में नहीं बिकती, न ही यह धन से खरीदी जा सकती। यह हर परिवार में स्वाभाविक ही होती है। परिवार में नई-नई आवश्यकताओं की पूर्ति कर दिया जाना, परम्परा का परिचायक नहीं हो सकता। परम्परा का न कोई रूप-रंग होता है, न कोई जात-पात और ना हीं कोई वर्ण या धर्म सम्प्रदाय। यह एक निर्मल जलधारा की भाँति, पूर्वजों से चलकर नई पीढ़ी में एक से दूसरे हृदय तक पहुँचती है। परम्परा से रिक्त हृदय, उस जर्जर इमारत की भाँति है जिसे अशु भजानकर त्याग दिया गया हो।

परम्परा का प्रमाण, संसार की विस्तृत भूमि है। उसके सिवा परम्परा का अर्थ कोई नहीं बता सकता। रिश्ते घर-परिवार के लिये परम्परा निर्वाहयोग होती है और होनी भी चाहिये। परम्परा कभी अपने-पराये में भेद करना नहीं सिखाती।

परम्परा में सत्य विद्यमान रहता है और सत् सभी भावों का समूचा सार है। यदि हृदय में ये दोनों हैं, तो ज्ञान की किसी पाठशाला में जाने की आवश्यकता नहीं है। परम्परा मित्रवत होती है, जिसमें वैमनस्यता का कोई स्थान नहीं होता । इसका निर्वाह करना परिवार के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य और धर्म होता है।

हां, यदि परिवार में व्यसन खोरी, सीनाजोरी, हिंसा, भयादोहन, चोरी चपाटी और झूठी शान-शौकत जैसी कोई परम्परा रहीं है तो उसका पालन परम्परा के रूप में नहीं किया जाना चाहिए। केवल वे हीं संस्कार परम्परा स्वरूप मानने योग्य हैं जो सत्य, अहिंसा आदि से जुड़े हों।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

झूठी शान-शौकत ये परम्परा नहीं ।
रिश्ते हों शर्मशार ये परम्परा नहीं।।

हम जो भी करें दिल से करें और जीवन में आनंद पाएं

डॉ. सीमा अग्रवाल

जीवन में आनंद कैसे पाया जाए? यह व्यक्ति, परिवेश, काल(प्राचीन या आधुनिक) बहुत सी बातों पर निर्भर करता है। व्यक्ति की उम्र के अनुसार भी आनंद का रूप बदल जाता है।

स्वयं व्यक्ति का स्वभाव या प्रकृति के अनुसार आनंद महसूस करने के अलग-अलग गुण है। बालक किस परिवार में पैदा हुआ है? कुछ जन्म से ही प्रतिभावान होते हैं जो अपनी योग्यता से समाज, देश, संसार में अपना नाम रोशन करते हैं, इसी से जोड़कर जीवन में आनंद पाते और देते हैं।

सर्वप्रथम हम आनंद को लेते हैं। हमारे देश में प्राचीन काल में लोगों को घुड़सवारी, तीर चलाना, चक्र, गदा, शिकार करना आदि का शौक देखा गया। मध्यकाल में भारत की विषम परिस्थितियां रही तो संगीत में महारत थी। इसमें गायन, वादन रहा। हमारे देश में योग्यता देखे तो पाएंगे ऋषि, मुनि तपस्या कर वरदान प्राप्त करने का या आदिकाल से वेद, पुराण आदि की योग द्वारा महत्वपूर्ण खोज की गई। शून्य की खोज, सूर्य से पृथ्वी की दूरी, सब यह योग द्वारा प्राप्त हुआ। इन सब की खोजने में हम आनंद लेते थे।

राम कृष्ण को जाने तो भगवान राम त्याग, वचन, मर्यादा पुरुषोत्तम रहे तो भगवान कृष्ण का गीता उपदेश आज भी उसमें रमते लोग आनंद का अनुभव करते हैं। हमारे मध्य युगीन भारत में देश तो सूर, तुलसी, रहीम, जायसी, मीरा आदि दोहे को गाने और लिखने में आनंद पाते थे।

आधुनिक काल जीवन में आनंद हम ज्यादा अनुभव कर सकते हैं। आज लोगों में खेल में आनंद लेते, महसूस करते नजर आ रहे हैं। इसकी दो वजह है, एक तो लोगों को इससे ख्याति मिल रही।

दूसरे देशों से जो युद्ध में अपनी भड़ास निकालते थे, आज खेल द्वारा वे अपनी पूरी ऊर्जा अपने देश को जीतने में लगा देते हैं और जितने वाले लोग या टीम एक भरपूर आनंद का अनुभव तो करती ही है। साथ ही उसे पैसा भी प्राप्त होता है, जिससे वह अपनी जीवन में आनंद पूर्वक रह सकता है। अतः परिवार का झुकाव भी उसमें नजर आता है, पर यह समय सीमित है। दौड़, भाग के खेल एक उम्र तक ही खेले जा सकते हैं। कुछ खेलों में मेहनत के बाद भी व्यक्ति गुमनामी में खो जाते हैं।

अधिकतर देखा गया है कि इंजीनियर, डॉक्टर, प्रोफेसर, सेना के अधिकारी सभी के बच्चों में स्वाभाविक रूप से उनमें गुण आ जाते हैं। घर के माहौल से उनके बच्चे भी वही बन जाते हैं।

आज यह एक सोचनीय प्रश्न है कि जीवन में आनंद लोग पैसा कमाने में मानने लगे हैं जिसमें ज्यादा पैसा आए, वही मार्ग अपनाते हैं।

पहले जैसे सम्मिलित परिवार की प्रधानता थी। आज परिवार एकल हो रहे हैं और उसमें आनंद खोजने लगे हैं और अपनी उम्र पैसा कमाने में लगा देते हैं। उन पैसों का उपयोग या आनंद कहे तो वह घूमने, देश- विदेश में, पहाड़ी या समुद्री, प्रसिद्ध स्थानों में जाकर पूरा करते हैं।

आज व्यक्ति जीवन में सुविधा को ढूंढता है। कितनी सुविधा उसे किस चीज से मिलती है? और चीजों को पाने में आनंद का अनुभव करता है पर यह सिर्फ एक मृगतृष्णा की तरह भटकता नजर आ रहा है। जब उसे उससे जीवन में आनंद नहीं नजर आता तो वह किसी मठ या संस्था से जुड़ जाता है और आध्यात्मिक शांति को पाने की चेष्टा करता है। पर क्या वह इस सबसे आनंद पाता है? जीवन में बहुत लोग अपनी प्रतिभा व गुण के अनुसार कार्य करते हैं जैसे किसी को बिजनेस में रुचि, किसी को सिलाई में रुचि, वह अपनी बुटीक या शोरूम खोलता है।

ऐसे सैकड़ो कार्य हैं जिसमें वह रमता है। हमें संतोष ही जीवन में आनंद दे सकता हैं। संतोष की अपनी अलग-अलग परिभाषा हो सकती है, कोई एक दुकान से ही संतोष कर लेता है तो किसी के सोने, चांदी की बड़ी दुकानें पूरे देश में बड़े शहरों में शोरूम है। आज कपड़ा, सोना, मकान, पर्यटन आज के समय में इसकी सबसे अधिक मांग है। जो भी करें दिल से करें और जीवन में आनंद पाए।

– भोपाल

स्त्री शक्ति 'रेडीमेड' नहीं हो सकती

निवेदिता निलयम युवा केन्द्र में जिला स्तरीय महिला सम्मेलन

दैनिक निर्दलीय के लिए प्रभात शुक्ला

वर्धा (महाराष्ट्र)। रिंग मार्ग पर ग्राम साटोडा चौक स्थित निवेदिता निलयम युवा केन्द्र में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में जिला स्तरीय महिला सम्मेलन आयोजित किया गया।

कार्यक्रम कमलनयन जमनालाल बजाज फाउंडेशन के तत्वावधान और और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी आचार्य विनोबा भावे की निकट शिष्या रहीं ब्रम्हचारिणी प्रवीणा देसाई के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। इसमें जिला के विभिन्न क्षेत्रों से ढाई सौ से अधिक महिलाओं ने सहभागिता की। उन्हें वक्ताओं ने वर्तमान के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की दशा, दिशा, स्थिति व परिस्थितियों पर आइना दिखाते हुए महिला सशक्तिकरण के मायने बताए। मंच के माध्यम से जो सारगर्भित, सकारात्मक, प्रेरक व शिक्षाप्रद संदेश संप्रेषित हुआ, उससे आयोजन गौरवान्वित एवं ऊर्जावान हो गया।

इस अवसर पर शिक्षाविद् एवं आचार्य विनोबा भावे की शिष्या भाविनी पारेख ने कहा कि देश व समाज की स्थिति-परिस्थिति के मद्देनजर माताओं ने युवतियों को सुरक्षित रहना तो सिखा दिया किन्तु असुरक्षा के बारे में नहीं बताया, आज इसकी खास जरूरत है जबकि शिक्षा और सुरक्षा की बात तो बहुत हो गई है। उन्होंने इस बात की वकालत की कि बलात्कारी के साथ उसकी माँ को भी सजा मिलनी चाहिए क्योंकि उस माँ ने अपने बेटे को यदि

समझाया होता कि 'स्त्री को देवी मानो' तो ऐसी घटनाएं घटित नहीं होतीं। आचार्य विनोबा भावे का जिक्र करते हुए ब्रम्हचारिणी भाविनी पारेख ने समाज में गीता के महत्व व उसकी उपयोगिता के बारे में बताते हुए कहा कि विनोबा जी ने कहा था- हर घर में हर माता के हाथ में गीता होना चाहिए। हर अच्छी माँ की अच्छी माँ, हर बेटा का अच्छा बेटा। स्वधर्म का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि स्वयं को समझना ही हमारा स्वधर्म है। मैं जो कुछ हूँ उसे अच्छी तरह कैसे निभाऊँ? महिला होने के नाते मेरा जीवन कैसा होना चाहिए, मेरा एक स्वतंत्र अस्तित्व है, मैं अच्छी माँ, अच्छी बेटी, अच्छी बहन व अच्छी सास कैसे बन सकती हूँ? यह सोच अगर समाज में आ जाए तो बहुत सारी समस्या हल हो सकती हैं। आज महिला आर्थिक दृष्टि से जरूर सफल हो सकती है पर पूर्णतः सफल तभी हो सकती है, जब वह आध्यात्मिकता से परिपूरित हो। बहनों की नींव आध्यात्मिक विचारधारा पर ही आधारित होनी चाहिए।

उपरोक्त तारतम्य में गीताई मिशन प्रमुख ब्रम्हचारिणी मैथिली बिसी ने महिला को परिभाषित करते कहा कि बुरी से अच्छी रीति की ओर ले जाने का नाम महिला है। आत्म बल को आगे ले जाने का नाम महिला है। परिवार में माँ गृह लक्ष्मी होती है उसे समाज में भी लक्ष्मी होना चाहिए। कोई बहन परिवार जोड़ती है तो कोई तोड़ती है। परिवार को बाँधकर रखना समृद्धि है। महिला सशक्तिकरण को लेकर उन्होंने कहा कि आज हर महिला को वस्तु से लेकर विचार तक 'रेडीमेड' अपनाने की आदत पड़ती जा रही है। स्त्री शक्ति 'रेडीमेड' नहीं है, यह शक्ति उसे खुद बनाना होगी। आचार्य विनोबा ने कहा था कि आने वाला युग महिला का होगा। इसी संदर्भ में नागपुर के प्रतिष्ठित व्यापारी व समाजसेवी किशोर भाई ने बताया कि महिला चाहे तो परिवार ही नहीं, समाज को भी बदल सकती है।

इसके पूर्व आयोजन की मुख्य अतिथि प्राचार्य सुषमा शर्मा ने सावित्री बाई फुले, गाँधी जी व आचार्य विनोबा आदि का जिक्र करते हुए कई प्रेरक एवं प्रभावशाली बानगी प्रस्तुत करते हुए कहा कि सशक्तिकरण दो प्रकार से हो सकता है- एक सबको इकट्ठा कर आर्थिक और मानसिक रूप से और दूसरा समाज में सभी को समान हक दिलाकर। उन्होंने नई तालीम पर प्रकाश डालते कहा कि विद्यालयीन बच्चों को केवल पुस्तक तक ही सीमित ना रखकर खेती, बुनाई, चरखा आदि बुनियादी कार्यों से जोडना चाहिए ताकि भविष्य में वो स्वावलंबी बन सकें। इस बीच समाज में शराब के दुष्परिणाम को चित्रित करते हुए एक प्रभावी नाटिका का मंचन भी हुआ। आभार प्रदर्शन पश्चात राष्ट्रगीत का सामूहिक गायन हुआ। मंच संचालन करते हुए श्रीमती सोनाली ने हर वक्ता के विचारों पर सारगर्भित प्रतिक्रिया रखी और प्रेरक संवाद किए जिससे उपस्थित प्रोत्साहित भी हुये। आयोजन व्यवस्था में ब्रम्हचारिणी दया बिजमवार, ब्रम्हचारी किशोर, मयूर साखरे, सुरेश भाई व शांतनु आदि ने मुख्य रूप से योगदान दिया।

केशवराव रबड़े नहीं रहे

निर्दलीय संवाद

पन्द्राखेड़ी। गायत्री परिवार ट्रस्ट सौसर शक्तिपीठ के सहायक प्रबंध ट्रस्टी एवं संस्कार पब्लिक स्कूल के संचालक चित्रसेन रबड़े के पिता केशवराव रबड़े का स्वर्गलोक गमन हो गया अन्त्येष्टि स्थानीय मोक्षधाम ग्राम पन्द्राखेड़ी में हुआ जिसमें रिश्ते नातेदार सामाजिक बंधु धार्मिक बंधुओ ने श्रद्धांजलि अर्पित की।